भारत पुनः महान हो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारत एक धर्मगुरू देश कहा जाता था। इसे सोने की चिड़िया भी कहा जाता था। यह आर्य देश है। यह अध्यात्म प्रधान देश है। ऋषियों–मुनियों ने तपस्चर्या के द्वारा यहां पर अध्यात्म के परमाणुओं को बिखेरा है। इसलिए यहां का वातावरण अध्यात्मिक है। जब किसी बहुमंजिली इमारत को बनाया जाता है तो उसकी नींव बहुत मजबूत बनाई जाती है जिससे वह तूफान में धराशाही न हो जाये। भारत के ऋषियों ने अपने तपोबल से भारत देश की नींव को बहुत मजबूत बनाया है। न जाने कितने आक्रान्ता भारत में आये किन्तु वे सभी भारतीय संस्कृति में समा गये। इस देश का बाल भी बांका नहीं हुआ। भारत देश की महानता का कारण यहां की सांस्कृतिक धरोहर है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, जियो और जीने दो की भावना ने भारत को महान बनाया है। पंचशील का सिद्धान्त भारत की पहचान है। भारत देश में अनेक धर्म और दर्शन हैं, अनेक विचारधाराएं हैं। सांस्कृतिक दृष्टि और भौगोलिक दृष्टि से भी यहां अनेकता दिखाई देती है। अनेक जातियां और धर्म सम्प्रदाय के मानने वाले लोग इस देश में रहते हैं, इसके बावजूद इस देश में एकता बनी हुई है। भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है। भारत ने विश्व को अहिंसा का बहुत बड़ा अवदान दिया है। योग जो भारत की सांस्कृति पूंजी है अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज इसकी प्रतिष्ठा हो चुकी है। 21 जून को पूरे विश्व में योग दिवस मनाया जाता है। योग अब केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के सभी देशों ने इसे स्वीकार किया है। भारत ने धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक मूल्यों की स्थापना के लिए विश्व के देशों के बीच में बहुत प्रयास किया है। विश्व आर्थिक मंदी में अस्त–व्यस्त हो गया था किन्तु भारत ने अपना संतुलन बनाये रखा। यही संतुलन भारत को महान बनाता है। हर देश के नागरिक को अपने देश से प्रेम होता है। यह प्रेम स्वाभाविक है। जो व्यक्ति जिस देश में रहता है, वहां का अन्न, जल ग्रहण करता है वहां की सांस्कृतिक पहचान को अपनाता है तो प्रेम होना स्वाभाविक है।

भारत एक ऐसा देश है जिसकी सांस्कृतिक पहचान हर देशों से अलग है। यहां के नागरिक इस देश को भारतमाता कहकर पुकारते हैं। जैसे माता के प्रति बच्चों का स्वाभाविक आकर्षण होता है, वैसे ही इस देश के नागरिकों का देश के प्रति स्वाभाविक आकर्षण है। भारत का इतिहास बहुत ही गौरवशाली है। भारत नामकरण के पीछे भी अनेक ऐतिहासिक किंबदन्तियां हैं। शकुन्तला के पुत्र भरत या भगवान् ऋषभ के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भी भारत पड़ा। यहां पर अनेक धर्मों और सम्प्रदायों के लोग प्रेम से जीवन–यापन करते है। यहां अनेकता में एकता दिखलाई पड़ती है। आज अगर हम भारत के इतिहास के बारे में बात करते है तो सबसे पहले अंग्रेजों की गुलामी का ही प्रसंग सुनने को मिलता है। अंग्रेजों ने भारत की आर्थिक स्थिति को बहुत ही जीर्ण–शीर्ण कर दिया था। इससे पूर्व का भारत सोने की चिड़िया कहा जाता था। ऐसे क्या कारण रहे होंगे कि भारत को विश्वगुरु कहा गया? बौद्धों और जैनों ने देश में अहिंसा का वातावरण फैलाया अहिंसा भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र रही है। विक्रमादित्य ने भारत को सांस्कृतिक रूप से बहुत ही समृद्ध किया। राजा का कर्त्तव्य केवल धर्म की रक्षा करना ही नहीं बल्कि न्याय करना भी होता है। प्राचीन राजा लोग भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए सुदूर देशों में व्यापार किया करते थे। भारत से मसाले और खाद्य सामग्री बाहर भेजी जाती थी और उसके बदले में विदेशों से सोना भारत लाया जाता था। जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत में सोने की आमद बढ़ गयी। प्राचीनकाल में भारत में सोने के सिक्के चलते थे। इसीसे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारे देश में कितना सोना था। एक समय था जब भारत की गणना दुनिया के सबसे अमीर देशों में हुआ करती थी। भारत की समृद्धि से आकर्षित होकर विदेशी आक्रांताओं ने भारत पर कई बार आक्रमण किये और यहां से प्रभूत मात्रा मे धन लूटकर ले गये। आक्रमण की यह परम्परा सदियों तक चलती रही। मुहम्मद गजनवी, मुहम्मद गोरी जैसे विदेशी आक्रमणकारी भारत पर आक्रमण करके यहां के मंदिरों को तहस–नहस किये और प्रभूत मात्रा में धन लूटकर अपने देश ले गये। सोने की चिड़िया का दर्जा भारत को कई वजहों से मिला हुआ था। उस समय भारत के राजाओं के पास प्रचुर मात्रा में धन–सम्पत्ति थी। उस समय भारत की कृषि व्यवस्था भी सुदृढ़ थी। यहां से मसाले कपास, लोहा विदेशों में निर्यात होता था और वहां से उसके

बदले स्वर्ण राशि प्राप्त की जाती थी। भारत के महान् शासकों ने अपने शासनकाल में राज्य की उन्नति के लिए कई कार्य किये थे। जिससे उनका राज्य आर्थिक रूप से सुसम्पन्न था। कहा जाता है कि मुगल शासन के दौरान देश की आय ब्रिटेन के पूरे राजकोष से भी अधिक थी। इसके अतिरिक्त भारत में ही सबसे पहले वस्तु विनिमय प्रणाली चलती थी। आयात–निर्यात की दृष्टि से भी देखा जाये तो भारत का निर्यात उस समय अच्छी दशा में था। कृषि के जरिये उत्पन्न हुई वस्तुओं का व्यापार उन्नत दशा में था। प्राचीन आदर्शों को अपनाने और नयी विचारधार को अपनाने से भारत पुनः महान बन सकता है।